ॐ

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय

मौनधारा, कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

द्वारा आयोजित

द्वि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (ऑनलाइन/ऑफलाइन)

(26-27 अक्तूबर 2023)

एवं

महर्षि वाल्मीकि जयन्ती महोत्सव

(28 अक्तूबर 2023)

विषय

महर्षि वाल्मीकि का जीवन दर्शन (योगवासिष्ठ के परिप्रेक्ष्य में)

पञ्जीकरण लिंक

https://forms.gle/7PuWoJXwCm9amLeB7

स्थान :-

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय

सभागार, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय,

जगदीशपुरा, अम्बाला मार्ग, कैथल

विश्वविद्यालय परिचय –

मान्यवर सुविदित हो कि हरि की हरितिमा से सृजित हरिस्वरूप हरियाणा प्रान्त के कैथल (कपिष्ठल क्षेत्र) में हरियाणा सर्वकार के अधिनियम 20/2018 के द्वारा महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की धारा 2(F) से सम्बद्ध है। यह विश्वविद्यालय संस्कृत एवं संस्कृति संरक्षण हेतु सन्नद्ध है। प्राच्यविद्या एवं संस्कृति को समृद्ध करने की दिशा में महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय आरम्भ से ही अक्षुण्ण योगदान देता आ रहा है। यहाँ मुख्यतः वेद, व्याकरण, ज्योतिष, साहित्य, दर्शन, धर्मशास्त्र, योग, वैदिक गणित, हिन्दू-अध्ययन आदि विषयों के शिक्षण की सम्यक् व्यवस्था के साथ – साथ कर्मकाण्ड विषयक सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण की व्यवस्था है। प्राच्य विद्या के अन्तर्गत वेद, वेदाङ्ग, ब्राह्मण, श्रौतसूत्र, आरण्यक-आदि विषयों के अध्यापन द्वारा छात्रों को विषयगत एवं प्रायोगिक ज्ञान प्रदान किया जाता है। विश्वविद्यालय द्वारा **महर्षि वाल्मीकि शोधपीठ, कपिष्ठल-कठ संहिता शोध केन्द्र, भारतीय ज्ञान-परम्परा शोध एवं प्रशिक्षण केन्द्र तथा सरस्वती वैदिक सभ्यता शोध केन्द्र** की स्थापना की जा चुकी है।

महर्षि वाल्मीकि शोधपीठ : एक परिचय

हरियाणा में सरस्वती नदी के तट पर विकसित वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता का केन्द्र कपिष्ठल क्षेत्र सुविश्रुत है। वैदिक, उत्तरवैदिक, रामायण एवं महाभारत कालीन सभ्यताओं के पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक संदर्भ हरियाणा के कपिष्ठल की महिमा को उद्घोषित करते हैं। यह क्षेत्र महर्षि वाल्मीकि का कार्यक्षेत्र रहा है अतः हरियाणा सरकार ने इस क्षेत्र में महर्षि वाल्मीकि के नाम पर ही इस विश्वविद्यालय की स्थापना की। इसलिए विश्वविद्यालय ने महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ की स्थापना की है। जिसका उद्घाटन दिनांक 08-10-2022 को **श्री कृष्ण कुमार बेदी, सलाहकार, माननीय मुख्यमन्त्री हरियाणा सरकार** के द्वारा किया गया।

इसी उपक्रम में विश्वविद्यालय के द्वारा **अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (सेमिनार) (ऑफलाइन) (26-27 अक्तूबर 2023)** एवं एक-दिवसीय **महर्षि वाल्मीकि जयन्ती महोत्सव (28 अक्तूबर 2023)** का आयोजन माननीय कुलपति महोदय के निर्देशन में आयोजित किया जा रहा है।

महर्षि वाल्मीकि का जीवन दर्शन (योगवासिष्ठ के परिप्रेक्ष्य में)

अति प्राचीनकाल से ही भारत ज्ञान-विज्ञान का प्रमुख केन्द्र रहा है। मनुष्य मात्र लोक व्यवहार में रहते हुए अपनी जीवन शैली को किस प्रकार से आदर्श स्वरूप में स्थापित करे जो इस लोक यथार्थ को स्वीकार करते हुए उसे परमार्थ के मार्ग में रूपांतरित करें, इस अद्वितीय विचार परम्परा का उदय तो वस्तुतः उपनिषद् काल में ही हो चुका था किन्तु भारतीय मनीषियों का यह ज्ञान प्रवाह वहीं तक कहाँ रूकने वाला था वह चिरकाल से प्रारम्भ होकर आज तक उसी गति से गतिशील है। महाभारत में श्रीमद्भगवद्गीता ने इस वास्तविकता को लोक-जीवन में प्रतिष्ठापित कराने का कृष्णार्जुन संवाद के माध्यम से सत्यनिष्ठ प्रयास किया और दूसरे सिरे पर आदि-कवि वाल्मीकि ने रामकथा से उत्पन्न वसिष्ठ राम के संवाद के माध्यम से इस परम्परा की सूक्ष्मातिसूक्ष्म विश्लेषण पद्धति प्रदान करते हुए अमृत तत्त्व को सम्पादित करने की सम्भावनाओं को लोक जीवन में जागृत करने का अपूर्व प्रयास किया।

योगवासिष्ठ-सिद्धान्त का सुनिश्चित सार है जो कि बिना तत्त्वज्ञान के स्पर्श के मानवमात्र की भौतिक और अभौतिक उपलब्धियाँ संसार के हितसाधन का पाखण्ड या बहुआडम्बर तो रचेंगी किन्तु धीरे-धीरे सब की सब विषमय हो जायेंगी। एक तटस्थ दृष्टि के उदय के अभाव के रहते लोक-जीवन की सभी दृष्टियाँ एवम् दर्शन आपसी ईर्ष्या एवं राग-द्वेष से ग्रस्त होकर मनुष्यता को हीन से हीनतर स्तर पर उपस्थित कर देंगी। जिससे लोग असुरक्षा, भय एवं उद्वेग में जीते हुए परस्पर एक दूसरे के लिए उत्पीड़न को ही उत्पन्न करेंगे। इस धरा पर विद्यमान विविध विशाल सागरों की भांति महर्षि वाल्मीकि द्वारा विरचित यह योगवासिष्ठ ग्रंथ भी संस्कृत साहित्य का एक विशाल सागर है। रामायण एवं महाभारत के समान इस ग्रंथ में बत्तीस हजार श्लोक प्रतिपादित हैं। पुरुषार्थ चतुष्ट्य-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की साधना का संदेश इस विशाल ग्रंथ में भी प्राप्त होता है। कर्म विवेचन के विस्तृत प्रसंग में कर्म के विविध स्वरूप-प्रारूप, दैव, उद्यम, प्रयत्न, अभ्यास आदि एवं कर्मफल, कर्मविपाक, कर्म परिमाण, वरदान, शापदान, सुख-दुःख, भोग, जीवन-मरण, बंध-मोक्ष, स्वर्ग-नरक, उत्थान-पतन, लाभ-हानि आदि विषयों का सरल दार्शनिक उपाख्यानों के माध्यम से सम्यक् वर्णन इस ग्रन्थ में निहित है। पुरुषार्थ चतुष्ट्य के अन्तर्गत अंतिम पुरुषार्थ की प्राप्ति मानव मात्र का लक्ष्य है तथा इस मोक्ष प्राप्ति का साधन योगवासिष्ठ में ज्ञान एवं कर्म का समुच्चय बताया गया है।

यह ग्रन्थ अत्यन्त आदरणीय है, क्योंकि इसमें किसी सम्प्रदाय विशेष का उल्लेख नहीं है। भारत के एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक इसका पाठ, मूल तथा भाषानुवाद में चिरकाल से होता चला आ रहा है। वैष्णवजनों के लिए जो महत्त्व भागवत पुराण और रामचरितमानस का है तथा कर्मयोगियों के लिए भगवद्गीता का है वही महत्त्व तत्त्व- ज्ञानियों के लिए योगवासिष्ठ का है। रहस्यविद् विद्वानों के लिए जहाँ गहनतम दार्शनिक सिद्धान्तों का इसमें विवेचन है वहीं दूसरी ओर अबोध बालक भी इसकी कहानियाँ सुनकर प्रसन्न होते हैं। ऐसा कोई भी प्रश्न नहीं है, जिसका समाधान इस कालजयी रचना में प्राप्त न हो। यह ऐसा अद्भुत ग्रन्थ है जिसमें काव्य, उपाख्यान तथा दर्शन, सभी का ज्ञान सरल सुबोध दृष्टि से भरा हुआ है। इस ग्रन्थ के लिए किसी शास्त्रकार की उक्ति है –

श्रीरामसदृशः शिष्यो वसिष्ठसदृशो गुरुः।
वसिष्ठसदृशं शास्त्रं न भूतो न भविष्यति॥

विषय :

महर्षि वाल्मीकि का जीवन दर्शन (योगवासिष्ठ के परिप्रेक्ष्य में)

उपविषयाः

1. महर्षि वाल्मीकि का दर्शन
2. योगवासिष्ठ में अवसाद प्रबन्धन
3. योगवासिष्ठ में योग का स्वरूप
4. योगवासिष्ठ में यम-नियम निरुपण
5. योगवासिष्ठ मे मोक्ष का स्वरूप
6. योगवासिष्ठ का काल निर्णय
7. योगवासिष्ठ में दुःख निवृत्ति का उपाय
8. योगवासिष्ठ के अनुसार पुरुषार्थ
9. योगवासिष्ठ में साधक का स्वरूप
10. योगवासिष्ठ में जगत् का स्वरूप
11. योगवासिष्ठ में मन का स्वरूप
12. योगवासिष्ठ में जीवन्मुक्ति
13. योगवासिष्ठ में आत्मसाक्षात्कार
14. योगवासिष्ठ में कर्मों का स्वरूप
15. योगवासिष्ठ में ज्ञानप्राप्ति के साधन
16. योगवासिष्ठ में ब्रह्म का स्वरूप
17. योगवासिष्ठ का कल्पनावाद

शोध सार (Abstract) के लिए आमन्त्रण

उपर्युक्त विषय में मौलिक शोध-पत्र आमन्त्रित हैं। शोधपत्र कहीं भी प्रकाशित न हुआ हो और लेखक का मौलिक कार्य होना चाहिए। शोध संक्षिप्तिका अधिकतम 500 शब्दों में होनी चाहिए। फॉन्ट यूनिकोड में साईज 14 होना चाहिए और यह हिन्दी, संस्कृत अथवा अंग्रेजी में होना चाहिए। यह शोध-सारांश दिनाङ्क 15/10/2023 तक mvspeeth@mvsu.ac.in इस ई-मेल पर प्रेषित करें। परीक्षण की सूचना के पश्चात् शोध-सारांश पत्र की स्वीकृति आपको दिनाङ्क 20/10/2023 तक प्रेषित कर दी जाएगी।

पञ्जीकरण - संगोष्ठी (Seminar) में भाग ग्रहण करने हेतु पञ्जीकरण अनिवार्य है। सभी प्रतिभागी दिनाङ्क 15/10/2023 तक अपना पञ्जीकरण सुनिश्चित करें।

पञ्जीकरण शुल्क-

प्राध्यापक/ विद्वान्	-	शुल्क 1000/- रुपये
शोधछात्र/छात्र	-	शुल्क 500/- रुपये,

भुगतान विधि - ऑनलाईन/ऑफलाईन माध्यम से कर सकते हैं।

आवास व्यवस्था- शोध-पत्र प्रस्तुतकर्ता के लिए पूर्व सूचना पर ही आवास की व्यवस्था है।

प्रकाशन - संगोष्ठी (Seminar) के गुणवत्तापूर्ण शोध-पत्रों का प्रकाशन महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के शोध-प्रकाशन विभाग द्वारा ISBN No. के साथ किया जाएगा।

अन्य सूचना हेतु - कार्यक्रम से सम्बन्धित विविध सूचनाओं हेतु विश्वविद्यालय की वेबसाईट का अवलोकन करें :- https://www.mvsu.ac.in/

सम्पर्क विवरण- संगोष्ठी से सम्बन्धित प्रश्न मुक्त ई-मेल mvspeeth@mvsu.ac.in या निम्नलिखित दूरभाष संख्या पर सम्पर्क करें –

दूरभाष सं. 79883-76657, 80767-23202

संरक्षक

प्रो.रमेश चन्द्र भारद्वाज

कुलपति

निवेदक

डॉ. बृजपाल

कुलसचिव

परामर्श-दात्री समिति

प्रो. भाग सिंह बोदला
(अधिष्ठाता, शैक्षणिक)

डॉ. जगत नारायण
(अधिष्ठाता, छात्र कल्याण)

डॉ. सुरेन्द्र पाल
(अधिष्ठाता, वेद-वेदांग संकाय)

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डेय
(विभागाध्यक्ष- हिन्दू अध्ययन)

संयोजक शोध-पत्र मूल्यांकन समिति

डॉ. नरेश शर्मा
(विभागाध्यक्ष, ज्योतिष विभाग)
सम्पर्क सूत्र- 7085811234

संयोजक

डॉ. हरीश कुमार
संयोजक, महर्षि वाल्मीकि शोध पीठ
सम्पर्क सूत्र- 7988376657

सह-संयोजक

डॉ. विनय गोपाल त्रिपाठी
प्रभारी , दर्शन विभाग
सम्पर्क सूत्र- 8076723202

पञ्जीकरण सम्पर्क हेतु
https://forms.gle/7PuWoJXwCm9amLeB7